व्यथा

(कविता आ गीत संग्रह)

जगदानन्द झा 'मनु'

'Vyatha', A Callection of Poetry

by Jagdanand Jha 'Manu'

क्रम

१ मिथिलाक गुणगान

सुनू मिथिलाक गुणगान अहाँ हम कि कहू अपन मोनेसँ
सभ किछु तँ अहाँ जनिते छी मुदा हम कहैत छी ओरेसँ

उदितमान ई अछि अती प्राचीन ज्ञानक बड़का भंडार अछि
ऋषि मुनिकेँ पावन धरती   महिमा एकर अपार अछि

डयौढ़ी डयौढ़ी फूलबारी आँगनमे अछि तुलसी सोभति
कोसी कमला मध्य बसल ई भारतकेँ सुन्नर मोती

भक्ति रससँ कण कण डूबल अछि महिमा एकर अपार
शिव जतए एला चाकर बनि कऽ सुनि भक्तकेँ करुण पुकार

काली विष्णु पूजल जाइ छथि मिथिलाक एक्के आँगनमे
छैक कतौ आन ई सामर्थ कहू होइ जे आँखिक देखनेमे

एहि धरतीसँ जानकी जनमलीह श्रृष्टि करैक लेल कल्याण
श्रीराम संग ब्याहल गेली पतिवर्ताक देलनि उदाहरण महान

आइ काल्हि केर गप्प जुनि पुछू भ्रस्ट बनल अछि दुनियाँ
मुदा मिथिलामे एखनो देखू शुरक्षित घरमे छथि कनियाँ

माए बाबूकेँ आदर दै छथि   एखनो धरि मिथिले वासी
पूज्य मानि पूजा करैत छथि घर आबए जे कियो शन्यासी

आजुक युगमे धर्म बचल अछि जे किछु एखनों मिथिलेमे
आँखिक पानि बचल अछि देखू जे किछु एखनों मिथिलेमे

कि कहु मिथिलाक महिमा लिखल जेए नहि लेखनीमे
हमरामे ओ सामर्थ नहि अछि बाँधि सकी जे पाँतिमे
****

२ कथा अमर अपन मिथिलाकेँ

कथा अमर अपन मिथिलाकेँ
एकरा जुनि बिसरू
समस्त संसार मैथिलीमय हुए
आब ओ दिन सुमरु।

बहुत पिसेलहुँ सत्ताक जाँतमे
आब जुनि पिसल जाउ
बहुत पछुएलहुँ पाँछा चलि कए
आबो आगू डेग बढाउ
निरादर किएक माएक भाषाकेँ
एकरा जुनि बिसराउ
आबो जागू होश सम्हारु
मैथिलीकेँ बचाउ।

उठू सुतल सिंह जगाबू
अपन स्वाभिमानकेँ
आसमानसँ ऊँच उठाबू
अपन मिथिलाक पहिचानकेँ ।
****

३ धन हमर मिथिला

जुनि हमरा चाही, धनक गठड़ीया
दए दिअ हमरा, हमर माटिकेँ पूड़ीया ।
लए लिअ हमरासँ, हमर कमाएल धन
धन हमर मिथिला, माटी एकर धन ।
माएक आँचर सन, हमर मिथिलाक धरती
पाएब एहन कहु, दोसर कतए धरती ।
दूर भऽ कऽ बुझलहुँ , मोल एकर हम
कि थिक हमर, आ की एकर हम ।

जाहि आँगनमे, जनमलहुँ खेलेलहुँ
दाबा पकैर जतए, चलब हम सिखलहुँ ।
आइ ओहि आँगनसँ, एतेक दूर भेलहुँ
कचोतैए मोनकेँ, दर्शनों नहि पेलहुँ ।

४ मिथिला राज

हम धीर वीर बलवान मैथिल
मिथला राज चाहैत छी,
ई हमर भीख नहि बुझू
अधिकार अपन माँगे छी ।

जाहि दिन धीर हम अधीर भेलहुँ
वीर हम वीरता देखा देव,
नहि, फेर विश्वाश करू हमर
की एक चाणक्य हम आर बना देब ।
****

५ गुमान

बहुत गुमान अछि हम मैथिल छी
मिथला हमर शान अछि
उदितमान ई अछि धरतीपर
कोनो स्वर्ग समान अछि ।

कणकण खलखल कोसी कमला
बुझु एकर पहिचान अछि
जनक जानकी आ विद्यापति
मिथलाक माथकेँ पाग अछि ।

भक्ती रसकेँ कथा की कहू
स्वयं शंकर चाकरी केने छथि
एकर बिद्व्ता जुनि कियो पुछू
मुंडनमिश्र आ अजानी
भारतीक नाम बिख्यात अछि।

*****

६ हमरा मिथिला राज चाही

भीख नहि अधिकार चाही, हमरा मिथिला राज चाही
जे हमर अछि खूनमे ओ खूनक अधिकार चाही

जनक वाचस्पतिकेँ पुत्र हम, हमर चुप्पीकेँ नै किछु आओर बुझू
शांतचित्त हम समुद्र सन, हमर क्रोधकेँ सोनित चाही

सिंह सन हम बलवान रहितो, मेघ सन हम शांत छी
ई जुनि बिसरी ऊधियाइत मेघकेँ, मुठ्ठीमे संसार चाही

जाहि कोखिसँ सीता छथि जनमल, ओहि कोखिक संतान छी
बाँहिमे प्रज्वलित अछि अग्णि, बस एकटा संकेत चाही

भूखसँ व्याकुल छी,   मुदा उठाएब नहि फेकल टुकड़ी
कर्ण बनि जे नहि भेटल, ओ ममता केर अधिकार चाही

माए मैथिली रहती किएक, निसहाय एना एतेक दिन
होम करे जे तन मन अप्पन, एहेन लव कुश सन संतान चाही
****

७ सभसँ आगू आगू छी

के कहैत अछि निर्धन छी हम
थाकल हारल मारल छी
हम छी मैथिलीपुत्र
दुनियाँमे सभसँ आगू आगू छी
देखू श्रृष्टिक   संगे देलहुँ
विदेह, जनक, जानकी हम
आर्यभट्ट, चाणक्य
दोसर नहि, बनेलहुँ हम।

पहिल कवि श्रृष्टिक
वाल्मीकि बनोलक के ?
कालिदास केर कल कल वाणी
छोरि मिथिला दोसर देलक के ?

विद्यापति आ मंडन मिश्रसँ
छिपल नहि ई विश्व अछि
दरभंगा महाराजक नाम
भारतवर्षमे बिख्यात अछि।

राष्टकविक उपाधि भेटल जिनका
मैथिलीशरण कतएकेँ छथि
दिनकरकेँ जनै छथि सभ
यात्री छुपल नहि छथि।

कुवर सिंह आ मंगल पाण्डे
फिरंगीक सिर झुकोने छथि
गाँधीजी असहयोग आन्दोलन
एहिठामसँ केने छथि।

देशक प्रथम राष्टपति भेटल
मिथिलाक पानिक शुद्धिसँ
दिल्ली के बसेलक कहू
ए एन झाक बुद्धिसँ ।

आईआईटीमे अधिकार केकर अछि
मेडिकल हमरे अन्दर अछि
विश्वास नहि हुए तँ आंकड़ा देखू
सभटा आइएएस हमरे अछि ।
****

८ मायक भूमि बजा रहल अछि

जुनि हमरा जकरु महामाया
माएक भूमि बजा रहल अछि
जाहि माटिकेँ देह बनल ई
ओ माटि हमरा बजा रहल अछि ।

रून-झुन संगी-साथीक हमरा
इआद बहुत आब सता रहल अछि
काका काकीक मधुर बोल
कानमे घंटी बजा रहल अछि
जुनि हमरा जकरु महामाया
माएक भूमि बजा रहल अछि ।

मह-मह मुरहिक गन्ध
गामक हमरा खीच रहल अछि
कनियाँ काकीक कड़कड़ कचड़ी
हमर मोनकेँ डोला रहल अछि
लहलह झूमैत खेतक धान
शीश हिला कए बजा रहल अछि ।

चौरचन, छठिक सनेसक स्वाद
हमर मोनकेँ कचोति रहल अछि
हुक्कालोलिक ऊक जे फेकल
सुमरि कए हमरा कना रहल अछि ।

नहि सहि सकैत छी दूरी एतेक आब
करेजाक बांध टूटि रहल अछि
जुनि हमरा जकरु महामाया
माएक भूमि बजा रहल अछि ।
****

९ मिथिलासँ पलायन

खेत खरिहान उजार भेलै सभटा
मिथिला हमर आइ बेगार भेलै सभटा।

नहि गामक हाट ओ
नहि कुजरनीक हाक ओ
नहि काकाक ठाठ ओ
मिथिलाक रीत हेराए गेलै सभटा।

नहि बजति पैजनियाँ
नहि बाबीक खेलौनियाँ
बाबाकेँ लाठी हेराए गेलै सभटा
मिथिला हमर आइ उजार भेलै सभटा।

पेटक आगिमे
आधुनिकताकेँ खाइमे
बेरोजगारीकेँ हाइमे
मिथिला हमर आइ पलायन भेलै सभटा
मिथला हमर आइ उजार भेलै सभटा।
****

१० गाम बदलि रहल अछि

गाम बदलि रहल अछि
समाँग बदलि रहल अछि
छनीक सुखक खातीर
लोक चाम बदलि रहल अछि।

गामक फूसक घर
पक्कामे बदलि रहल अछि
शहरक पक्का मकान
टावरमे बदलि रहल अछि।

टीभी रेडिओ
मोबाईलमे बदलि रहल अछि
ब्याहक पबित्र बंधन
लिव इन रिलेशनशिपमे बदलि रहल अछि।
अख़बार आबि गेल नेटपर
चूल्हा गेएशमे बदलि रहल अछि।

पाइ पाइकेँ फरिछोंटमे
भाइ भाइकेँ बदलि रहल अछि
रुपैया नहि आब चौब्बनी अठ्ठनीमे
सिनेह बदलि रहल अछि।

परिभाषा आब सम्बन्धकेँ
खर्चामे बदलि रहल अछि
पिता पुत्रक प्रेम सबहक सोझा
सराधमे बदलि रहल अछि।

मुखिया बदलि रहल अछि
सरपन्च बदलि रहल अछि
नहि कोनो गामक
समस्या बदलि रहल अछि।

माए कनै छथि एखनो
आँचर तर मुँह नूका कए
अछैते बेटा पुतहु बिनु
हाथ झरकेनाइ नहि बदलि रहल अछि।

बाबूक आँखिक नोर
एखनो ताकि रहल अछि
आबि बनेए कियो लाठी
नहि हुनक सपना बदलि रहल अछि।
****

११ मैथिलिक विकासक बाधा

मैथिलीक विकासक बाधा थिक
आजुक युवा शक्ति मिथिलाक
पढ़ि लिख कए बनि जाइ छथि
डाक्टर आ कलक्टर
मुदा नहि पढ़ि लिख सकैत छथि
मिथिलाक दू आखर ।

घरसँ निकलैत
ओ कहथिन "चलो स्टेशन"
लागैत छनि संकोच
कहैमे कि “चलू स्टेशन"
जेता जखन गामक चौकपर
लागत जेना
बसि रहला मैथिलीक कोखिपर ।

सदिखन दूगोट समभाषी
बाजत अपने भाषा
परञ्च दू गोट मैथिल
जतबैलेल अपन परसनेल्टी
मैथिली तियागि कए
बजए लगता सिस्टमेटी

अपन माएक भाषासँ
प्रेस्टीजपर लागैत छनि बट्टा
लोग की कहतनि
संस्कारीसँ भऽ गेला मरचट्टा
संस्कारीसँ भऽ गेला मरचट्टा ।
****

१२ हम एहन किएक छी

हम एहन किएक छी ?
माटि पानि छोरि कए
जाति पातिपर लड़ैत किएक छी ?
हम एहन किएक छी ?

आएल कियो हाँकि लेलक
जाति पातिपर बँटि देलक
ऊँच नीचकेँ झगड़ामे
अपन विकास छोरि देलहुँ
हम एहन किएक छी ?

के छी अगरा ?
के छी पछरा ?
सभ मिथिलाक संतान छी
फोरि कपार देखु तँ
सभक सोनित एक्के छी
हम एहन किएक छी ?

मुठ्ठी भरि लोक
अपन स्वारथक कारणे
अपना सभकेँ
तोर रहल अछि
मोर रहल अछि
जाति पातिमे ओझरा कए
मिथिलाक विकास रोकि रहल अछि।

धरतिकेँ कोनो जाति होइ छैक ?
मएक कोनो जाति होइ छैक ?
तँ हम सब सन्तान
बटेलहुँ कोना ?
हम एहन किएक छी ?

आबो हम सँकल्प करी
जाति पातिपर नहि लरी
हमर मिथीला हमहीँ संभारब
सप्पत मात्र एतबे करी ।
****

१३ हम मौन किएक छी ?

हम मौन किएक छी?
हम चूप्प किएक छी?

निष्ठुर हमर समाज बनल अछि
निराकार सरकार
निर्लज सोनित आताताई
निर्भीक गुंडा राज

हम मौन किएक छी?
हम चूप्प किएक छी?

परवाशी बनि हम रहब कतेक दिन
दूर पराएब कतेक दिन
हमर समाज हमहीँ सुधारव
हमर सरकार हमहीँ बनाएब
आताताइ गूंडाकेँ आब हमहीँ सताएब

हम मौन किएक छी?
हम चूप्प किएक छी?
****

१४ हम नारी नहि

के पतियाएत ई केकरा कहु
सभक आँखिमे पसि कए कोना रहु

सदिखन आँगुर हमरेपर उठल
कतेक परीक्षा आबो सहु

जतए ततए हमहीँ लूटल गेलहुँ
घर बाहर सभतरि हमहीँ ठकेलहुँ

हम नारी नहि नरकैँ भोग्या
सबदिन हमहीँ जितल गेलहुँ

झूठे घर घर पूजल जाइ छी
मुड़ी मचौरि हम भोगल जाइ छी
आबू रावण भाइ बनि हमर
रामसँ पाछू छुटल जाइ छी।
****

१५ कोना मदर डे हैप्पी ?

आब केहन जमाना आबि गेल
बर्खमे एक्के दिन
माएकेँ इआद करै छी,
मदर डेकेँ नामपर
माएकेँ इआद करै छी
कि हुनक सुखएल घाकेँ
काठी कए कऽ जगाबै छी।

हम बिसैर गेलहुँ

अपन माएकेँ
मुदा ओ नहि बिसरली,
जाहिखन हुनका भेटलनि
सुन्दर कार्ड 'हैप्पी मदर डे' लिखल
भेलनि करेजा तारतार
नोर टघैर कऽ
कार्डक स्पर्शसँ
गालकेँ छूबैत
हुनक करेजा तक चलि गेल
आ करेजामे बंद
महामाएकेँ कोंढ़सँ
सोनितमे डुबल शव्द निकलल
आह !
की ई हमर ओहे लाल ?
जेकरा पोसलहुँ खूनसँ
पाललहुँ अपन दूधसँ
अपने सुतलहुँ भिजलमे
ओकरा लगेलहुँ करेजसँ।
आइ
चारि बर्खसँ भेटल नहि
रहि रहल अछि परदेश
अपन कनियाँ सँग
बिसरि गेल बिधवा माएकेँ
आइ अकस्मात माए इआद एलैह
ई सुन्दर चिट्ठी (कार्ड) पठेलक
मुदा की लिखल ?
'हैप्पी मदर डे'
नमहर साँस लैत
हुनक मोन आगू बाजल
जखन मदरे नहि हैप्पी
तँ कोना
मदर डे हैप्पी
तँ कोना मदर डे हैप्पी ?
****

१६ मोनक व्यथा

किनका कहियौन पतिएताकेँ
हमर मोनक व्यथा बुझताकेँ

बंद पिंजराकेँ चीड़ै जकाँ
दिन भरि हम फरफराइत छी
जुनि बुझू हम नारी मिथिलाकेँ
हम तँ मकड़ जालमे ओझरेल छी

दुनियाँकेँ तँ बात नहि पुछू
कोना कि केलक व्यबहार यौ
जननीकेँ गर्भमे अबिते देखू
बिधाता मुनलनि केबार यौ

मए बाबू हमरे दुखसँ
पिचा गेला जीवनक पहाड़मे
नैन्हेंटासँ पन्खि गेल काटल
उड़ियो नहि पएलहुँ संसारमे

बाबूकेँ आँगुर छोडियो नहि पेलहुँ
पतीकेँ हाथ धराए गेलहुँ
नहि किछु बुझलहुँ रीत दुनियाँकेँ
अपन किएक सभ बिसराए गेलहुँ

नव घर आँगन नव समाजमे
जल्दी कियो कोना अपनेता
दोख नहि किछु हुनको छनि लेकिन
हमरा किएक कियो बुझता

घरसँ कहियो नहि बाहर निकललहुँ
ऊँच नीचकेँ ज्ञान नहि पेलहुँ
अर्जित छल नहि बुद्धि विद्या किछु
नैन्हेंटामे सासूर हम एलहुँ

कोन अपराध जन्मेसँ केलहुँ
बाबू अहाँ अपन संग नहि रखलहुँ
नहि पतिएलहुँ हमरोमे जीवन
मोटरी बुझि कऽ दूर भगेलहुँ
****

१७ माए

कोना कए बिसरबै माए
अहाँक सिनेह ओ
आँचर तर अहाँक बसलहुँ
पिलहुँ ममताक नीर ओ

हम सुती सुखलमे आ
अहाँ माए तीतलमे
अपने भूखे सुति कए माए
पोसलहुँ हमरा घीमे

रौद पानि अपने सहलहुँ
हमरापर नहि आएल आँच
हम सुती राति राति भरि
अहाँक रहेए निन्न काँच

नव नव कपड़ा पएलहुँ
हम, सब पावनि तिहारमे
एक जोड़ साड़ीमे माए
अहाँक जीवन बीतल बिचारमे

सब शिक्षा सब दीक्षा
अहाँ हाथे अप्पन देलहुँ
सुख छोरि हमरा लेल
दुख सबटा अहाँ लेलहुँ

हे माए आइ धरि
अहाँक एतेक सिनेह
छोरि अहाँ लग
दोसर कतौ नहि पेएलहुँ।
****

१८ हम कवि नै छी

हम कवि नै छी
वस ! हमरा भीतर किछु आक्रोश अछि
जे समय-समयपर
लाबा बनि फूटि परैत अछि
जँ हम कवि
तँ हमरा एहेन असंख्य आक्रोशी
पटकैत अछि
अपन अपन आक्रोशकेँ
पाथरपर अपन अपन हथौरी नेने
जेठक रौदमे पिआसे
माघक बरसाती जाड़मे भूखे
मुदा ओकर कविताकेँ
के सुनैत अछि
सब बौक बहीर बनल
अपन अपन टेढ़ आँखिसँ देखैत
मनक कोनो कोणमे
हथौरी आ पाथरक
चोटक वेदनाकेँ नुकोने
चलि जाइत अछि
कतौ केकरो कोनो कविक करेजक
आँखिक दुनू कोणा गिल भऽ जाइत अछि
तैयो कविता के सुनैत अछि
नै पाथरक
नै हथोरीक
आ नै भूख पिआससँ विकल पेटक।
*****

१९ हम मनुख, मनुख छी

अहंकार इश्वरक भोजन छैक
मनुखक प्रविर्ती छैक
आ दानबक पोषक छैक

इश्वर हम भऽ नहि सकै छी
दानब बनैकेँ तैयार नहि छी
मनुख बनैकेँ प्रयाश नहि करैत छी

हम मनुख, मनुख छी
मनुखतासँ खसलहुँ तँ दानव छी
ऊपर भएलहुँ तँ देबता छी
****

२० पाई

आई पाईसँ पिआर
किनल जाइ छैक
सम्मान किनल जाइ छैक
वस होबाक चाही जेबीमे
पाई
हमरा नहि चाही
ई पाईयक दुनियाँ
हमरा नहि चाही
ई भाराक दुनियाँ

हम तँ वसाएव
अपन एकटा नव दुनियाँ
जाहिठाम प्रेमक महत्व होए
सम्मानकेँ पूजा होए
जाहिठाम
ठोड़पर हँसी आनैक लेल
करेजासँ आह नहि निकलै
शब्द बजैसँ पहिले
लाबामे नहि बदलै
जाहिठाम
अर्थकेँ अर्थ समझल जाइ
सबहक भीतर
एकटा पिआरक स्वर्ग
बसाएल जाइ ।
****

२१ आई

आई की अछि ?
राजनीतिकेँ करकराहट
कुरसीकेँ मरमराहट
पदकेँ छिना झपटी
फाइलकेँ फरफराहट ।

आई की अछि ?
चुनावक गरमाहट
वोट बेंकक रिजर्बवेशन
चुनाव जितैक लेल
बूथ केपचेरींग केर नव मेथड।

आई की अछि ?
वचनसँ मुहँ मोरनाइ
कुरसीसँ सटनाइ
आओर फेर कखनो नै
छोड़क लेल नम्हर चूप्पी ।

*****

२२ एक दिन हमहूँ मरब

एक दिन हमहूँ मरब
दुनियाँक सुख दुख छोरि कऽ
निश्चिन्त हेवा हेतु
देखै हेतु दुनियाँमे अपन प्रतिबिम्ब
के ख़ुशी होइए के दुखी होइए।

एक दिन हमहूँ मरब
देखै लेल समाजमे
हमर की स्थान छल
देखै लेल किनका ह्रदयमे
हमर की स्थान छल।

एक दिन हमहूँ मरब
करए लेल अपन पापक हिसाब
हमर पापसँ के कुपित छल
के क्रोधित छल
के द्रविद चिंतित छल
के खुशी छल
के दुखी व्यथित छल ।

एक दिन हमहूँ मरब
परखै हेतु अपन ह्रदए
अपन सिनेहि स्वजनक हृदय
अपन मितक ह्रदए
अपन अमितक ह्रदए।

*****

२३ गरीबी

गरीबी की छैक
सभसँ बड़का ब्याधि
सभसँ बड़का व्यथा
सभसँ बड़का छूत छै
एहि द्वारे तँ भगै छै
गरीबसँ ई सभ्य समाज
किएक तँ
सभसँ बड़का अभिशाप ई छै।

गरीब झपटै छैक
भोजक पातपर गिद्ध जकाँ
जखन की मनुक्खकेँ तँ नहि
भगवान बनोलनि गिद्ध जकाँ
कोनो गामक चौक
वा सिमरिया घाट
सगरो भेट जाएत दू चारिटा
गरीब झपटैत गिद्ध जकाँ।

आजुक नीति इहे छैक
गरीबकेँ मेटाउ
गरीबी मिट जाएत जल्दी
एहि द्वारे गरीबीसँ भागू
जेना हुए जतएसँ हुए
गरीबी मेटाउ अपन अपन जल्दी
नहि तँ गरीबीकेँ मिटाबै लेल सरकार
गरीब !
अर्थात 'मनु'केँ मिटा देत जल्दी-जल्दी।
****

२४ पाई

सम्बन्धकेँ दुनियाँमे आइ जोरै छै पाई
एक दोसरासँ आनकियो नै तोरै छै पाई
भगवानकेँ नै कहियो देखलहुँ हम
कलियुगमे भगवानो कहाबै छै पाई
नै पूजा नै मंदिर पाई बिनु
अधर्मोकेँ धर्म बनाबै छै पाई
खून कैयो कऽ पाईसँ पाप मेटाइ छैक
अब्बलकेँ सगरो पिसै छै पाई
माएक ममता बाबूक सिनेह
सबहक मोल निकालै छै पाई
कनियाँक प्रेम जँ देखैक हुए
हाथमे दऽ दियौन बेस जथगर पाई
नंगटे जे खेलाइ छल कोरामे कहियो
ओकरो बड़का बनाबै छै पाई
'मनु' नै मन तोरलक ककरो
आई दुनियाँमे ओकरा नीच देखाबै छै पाई।
****

२५ अंतःद्धंद
(एकटा पंखा मिस्त्रीक व्यथा)

एक हथौड़ीक सवाल छल
आओर अक्ल हमर खराप छल
हम सोचैत छलहुँ आब की होएत
ठीक नहि हमर हाल छल।
दिमागक स्क्रू हमर
जेना फ्री भए गेल हुए
हाथक हमर हथौड़ी
जेना फूल भए गेल हुए।
हम चाहैत छलहुं खसेए पूर्व
मुदा पश्चिममे जा कए खसैत छल
हम आब करू की
हमर बुद्धिमे नहि किछु अबैत छल।
बर्खक साधना हमर
किएक निष्फल भए रहल छल
मोन चाहैत छल किछु आओर
परन्च किछु आओर भए रहल छल।
सामने ठार ग्राहक हमर
आओर दिमाग चाइट रहल छल
पहिलेसँ हम खिसिएल
हमरा आओर तामस भए रहल छल।
नुकाबैत हम अपन कमजोरी
मोन हमर नबका स्वांग रचि रहल छल
दी की ओकरा बड़का बहाना
इहे बिचार मोन सोचि रहल छल।
आखीर सीमा पार कए गेलै
अपन सम्पति केर प्रेम ओकर
बिच्चेमे ऑन भए गेलै
मुँह रिकार्डिंग सुन्नर ओकर।
हमहूँ खाड़ खा चुकल छलहुँ
बहुत पहिने हारि मानि लेने छलहुँ
दए देलिएनि एकटा जबरदस्त गोली
'भऽ गेल ई बेकार' कहि देने छलहुँ ।

सुनैत देरी शव्द बेकार
आगिमे घी डलि गेलै
तामसक ओकर सीमा
फूटि कए बाहर आबि गेलै।
हमहूँ एकरे इंतजारमे

कखनसँ बाट जोहि रहल छलहुँ
फेक सड़कपर देलौं चट्टे
जाहिमे एखन धरि लागल छलहुँ।
आब तँ ग्राहकक होश उड़ि गेलै
हाथक सुगा ओकर फूड़ भए गेलै
नचैत फतिंगा सन ओ
हमरा गीत सुना रहल छल।
सुनैत ओकर अमृत वचन
हमर मोनकेँ डरा रहल छल
मुदा अपन टोलक कुकुर जकाँ
हमरो तामस शेर बनल छल।
मजाल ओकरो की किछु आगू करेए
बस धमकाबैत हमरा जा रहल छल
हमरो मोन पश्चयातापक आगिमे
किछु-किछु तपि रहल छल।
कोइस रहल छलहुँ अपन पेसाकेँ
छी इहो कोनो काज अछि
एरे गेरे आबि कए एहिठाम
नीक-बेजए सुना जाइत अछि।
सभकियोक बुझैत अछि बैमान
हम इमानदारीक दम भरै छी
हमरासँ बढ़ियाँ कोंटाक भिखमंगा
जेकरा हम हँसि कए पाइ दै छी।
फेर दिमागक कोणामे बैसल
आजुक मनुक्खसँ बजै छी
बिनु किछु केने बैमान कहलाइ
तँ किछु कए क किएक नहि पाबै छी।
एहि तर्कमे दम बहुत छल
जीवैक आब ढंग इहे अछि
अपनेलहुँ आब नवका रस्ता
सभ इमानदार बहुत कहैत अछि।
*****

२६ काल

छोरु गौरवमय गाथा भूतकाल केर
आब जीवू वर्तमानमे
जरल जुन्ना जकाँ ऐँठल
देखैएमे खाली
छुबैत मातर जे छाउर बनि जए

जितैक लेल आन मान आ प्रतिस्था
पाछू जुनि,
देखू आगूक
ओहो तँ कियो छैक
जे चानकेँ छुलक
तँ हमहीँ कहिया धरि
चानक पूजा करब
ओहो तँ कियो छैक
जे मंगलपर पेएर रखलक
तँ हमहीँ कहिया धरि
मंगलकेँ अमंगल मानि
काज नहि करब
ओहो तँ कियो छैक
जे पाँतिक आगू चलैत छैक
तँ हमहीँ कहिया धरि
झंडा लऽ कऽ पाँतिक पाछू चलब

मानलहुँ हमर भूत
बड़ नीक आ उत्तम छल
मुदा वर्तमान किएक एहेन अछि
आबू देखू, बैस कए सोचू
कि सनेस हम अपन भविष्यकेँ देब ?
जँ रहलहुँ चूप
हाथपर हाथ धेने
तँ ओकरा लग
कोनो नीक भूतो नहि रहत
आ जाकरा लग
वर्तमान आ भूत दुनू शून्य
ओहि लोकक
ओहि संस्कृतिक
आ ओहि समाजक लुप्त भेनाइ
निश्चित छैक
आब अहीँ कहू
कि हम सभ

हमर सबहक संस्कृति
हमर समाज, कि लुप्त भए जाएत ?
कि लुप्त भए जाएत ?
कि लुप्त भए ....
****

२७ अन्हार

पूछलनि हमरासँ हमर कनियाँ
अहाँ सोचैत की रहैत छी ?
हऽम !
हम सोचैत नहि छी
हम देखैत छी
हम दुनीयाँकेँ बुझैक प्रयत्न कए रहल छी
कि हमहूँ एहि दुनीयाँक हिस्सा छी?
कि हम देशक हिस्सा छी ?
कि हम एहि राजक हिस्सा छी ?
कि हम एहि समाजक हिस्सा छी ?
कि हम अपन परिवारक हिस्सा छी ?
नहि ! नहि ! नहि ! नहि !
तँ फेर हमर अस्तित्व की अछि ?
हम एहिठाम किएक एलहुँ ?
हम एहिठाम किएक छी ?
हम एहिठाम की कए रहल छी?
किछु नहि
नहि बूझल
नहि जनैत छी
किछु नहि
नहि ! नहि ! नहि ! नहि !
किछु नहि
किछु नहि अर्थात शून्य
शून्य
अन्हार
नाकामयाबी
अलगाव।

एहि जिनगीक कोन मोल
जकर किछु सार्थकता नहि

जन्म लेनाइ
अभाबमे पोसेनाइ
सपनाक गरदनि घोटनाइ
माथपर जिमेदारी आ चिन्ताक बोझ
असफलता
शून्यता
फेर एक दिन
सभ चिन्तासँ मुक्त भऽ
लुप्त भऽ जेनाइ
काल्हि
जाहिखन एकटा नव भोर होएत
केकरो मोनमे इआद नहि
केकरो मुँहमे नाम नहि
इतिहासक पन्नामे कथा नहि
फेर एकटा शून्य
घोर अन्हार
अपार अन्हारक साम्राज्य
जाहिठाम
आन कि अपनो सभ इआद नहि राखत।

कि इहे जिनगी छी ?
एकरे नाम जीवन अछि ?
इहे मनुक्खक जीवन पाबैक हेतु
चौरासी लाख योनी पार करए परैक छैक
एहिठाम की भेटल
खाली शून्य
घोर अपार अन्हार
यदि हाँ
इहे जीवन अछि
इहे जीवनक सार अछि
तँ हे भगवती
हमरापर दया करू
हमरापर कृपा करू
हमरा अहाँक ई जीवन नहि चाही
हमरासँ नीक तँ कीड़ा मकोड़ा
मानलहुँ कि ओकरो लग बड्ड शून्य छैक
घोर अन्हार छैक
मुदा
अभाब नहि छै
असफलता नहि छै
निराशा नहि छै
चिन्ता नहि छै

माथपर बोझ नहि छै
ओ अपनाकेँ तुक्ष नहि बुझै छै
आर
फेर ओकरा
एकटा नव उच्च जीवन पाबैक आशो तँ छैक।

हमरा लग की अछि ?
किछु नहि
खाली आर खाली घोर अन्हार
हम जन्म लै छी
आ ओकरा तियागि कए
एकटा अनन्तमे हरा जाइ छी
काल्हि
हमर नामो धरि नहि रहि जाइए
हे भगवती
कि हमरा सभकेँ
एहने जीवन भोगैक लेल
जीवन देने छी
तँ कृपा कऽ अपन जीवन लए लिअ
हमरा सभकेँ एहेन जीवन नहि चाही
कमसँ कम
हमरा तँ बिल्कुल नहि
हमरापर दया करू भगवती
अपन ई जीवन लऽ लिअ ।
****

२८ घटकक जवाब

हमर तीसम बर्खमे
पुछलनि हमरासँ
हमर घट्टक
बौआ,
अहाँ की काज करैत छी ?

हम शांत चितसँ
हुनका उत्तर देलहुँ
हम काज नहि करैत छी
आओर बाद बाँकी सभ किछु करैत छी
खूब गप्प छकरैत छी
एसनो पावडर लगा कए
जीट्ट जाटसँ रहैत छी
नव सिनेमाक पहिल सो देखैत छी
राजनीतिक रैलीमे सभसँ आगू
झंडा लऽ कऽ चलैत छी
रेल रोकू बस तोरू
वा रस्ता रोकू
सभटा हमही करैत छी।

धूर !
ई छोट छोट काज करैक बास्ते हम थोरे एलहुँ
ओनाहो
कोनो सिद्ध बाबा कहि गेला
“अजगर करए नै चाकरी
पंछी करए नै काज”
तैँ हम हुनक कथनीकेँ
कोना कए ठूकरा दिअ,
हम तँ ओहि खानदानसँ छी
जाहिठाम नाक पोछै लेल
नकपोछना राखल जाइत छल
पेएर धोबै लेल खबास जाइत छल,
हमर बाबीकेँ
डिबिया लेशै लेल नोकर छलनि
हमर बाबाकेँ दलानमे
चारिटा सोंगर रहनि।

एतेक गप्प सुनि
बुरहा घट्टक

जे पुछने रहथि प्रश्न
समूचा तमाकुल एके संगे घोंतैत
मुँह बोने
हमरा दिस तकैत
एक बेर फेर बजलाह
जेना की मधुमाछीक
छत्तामे हाथ देबैक सहास कएने होएथ
तँ आगूक की पिलान अछि ?
हमहुँ चट्टे बजलहुँ
पिलान !
पिलान तँ एहन सुन्नर सुन्नर अछि
इंद्रा आवास योजनासँ घर बनाएब
राजीव योजनासँ भत्ता लेब
चाचा नेहरु अस्पताल बच्चा लेल जिन्दावाद
जेबी खर्चा लेल
पाञ्च बर्खपर इलेक्शन महो महो।

ई सुनिते घट्टक महोदय भगला एना
गामक कुकरो सभ अचम्भीत
हम तँ खीहारलहुँ नहि
ई भागला कोना ।
****

२९ रोजगार बनाम कविता

एकटा मित्र कहलनि हमरासँ
अहाँ कोन दुनियाँमे रहैत छी
दुनियाँ दारीकेँ छोरि कए
कवितामे किएक रमल रहैत छी
दिनमे फोफ कटै छी
आओर राति कए कविता करै छी
हम कहलयनि रहए दिअ
नहि दोख निकालू कविमे
दुनियाँ दारीमे कि राखल
जे राखल कविता रचएमे
किएक तँ बेरोजगारीकेँ एहि भीड़मे
हम अपनाकेँ नहि कतौ देखलहुँ
रोजगार तकैत तकैत
कतेको रोजा राखि लेलहुँ
आखीर अपनो दिमागमे
आएल एक बिचार
रोजगार छोरि कए
करल जए कोनो बेपार
मुदा हाय हमर किस्मत
कतए ओ हमर हिस्सामे
ओ तँ रहैत अछि
लाल हरियर रुपैयाक थाकमे
मुदा हम तँ छी
कंगाली केर टकसाल
एहनेमे बीत गेल
हमर जीवनक पेंतीस साल
साल तँ आएल गेल
मुदा पाबि गेल एकटा खाट छी
आब ओहिपर दिनमे फोफ कटै छी
आओर राति कए कविता जड़ै छी
एहि द्वारे हम कहैत छी
नहि ‘मनु’ कविकेँ एना बदनाम करू
अहूँ कवित गुण पाबि कए
कविताक धियान धरू
नहि तँ रोजगारकेँ लाइनमे
रोजा केर इन्तजाम करू।
****

३० बाबा नहि रहला

हमर बाबा आइ चारि बजे भोरे नहि रहला
आब ओ स्वर्ग गेला कि नर्क
से हम नहि कहब
किएक तँ हम चित्रगुप्त नहि छी।
जीवन भरि बड़ सुख कएला
एखन अखड़ा तुलसी चौरा लग परल छथि
पोता पोती छोरि
परपोता परपोती दर्जन भरि छनि
मुदा एखन सभ बड्ड दूर
जँ कियो हुनका लग अछि
तँ अछि झहरल गामक झहरल लोकसभ
आ रेगिस्तानक मृगतृष्णा जकाँ
एकटा आश
कि परदेशिया बेटा पोता सभ आइब जेए
मुदा नहि
गाम आब नहि रहल एतेक लऽग
जे कियो बाबाक मुइलाक समाद सुनेए
आ नहि रहल केकरो करेजामे एतेक मर्म
आ मर्म रहितो साधनक अभावमे
चाहितो कियो दौड़ जेए
हुनक अर्थीकेँ कन्हा दै लेल।
(भोरक ६ बजे, १८/९/२०१४)
****

३१ मोनक प्रश्न

की कवियो सभक धर्म होइ छै ?
कि सभ कवि बेधर्मी होइ छै ?
हाँ हाँ ई जुनि कहि देब, कविक धर्म
हमरा कविक धर्म नहि
हमरा बुझैके अछि कविके घर्म
धर्म ! ओ धर्म
अहाँक पुरखाक घर्म
जे अहाँके वैष्णव बनेलक
जे अहाँके टीक रखब सिखेलक
जे अहाँके माय भगवतीक सेबक बनेलक
आ जे केकरो गायभक्क्षी बनेलक
ओ धर्म

किएक
अनायास ई प्रश्न किएक ?
आइ देख रहल छी
जाहि कविके दाढ़ी नै भेलैए
ओहो गड़ीया रहल अछि
धर्मके टीक आ चाननके
गड़ीया रहल अछि
धर्मक गप्प करै बलाके
गड़ीया रहल अछि
धर्मक स्थानके
आ धर्म देवीके

कमोबेस मैथिलीक कविक सभक
इहे चालि अछि
हाँ ! कियों चिन्हार
तँ कियों अनचिन्हार अछि
तें पुछए परल ई प्रश्न
की कवियो सभक धर्म होइ छै ?
कि सभ कवि बेधर्मी होइ छै ?
यदि बेधर्मी भेनाई अनिवार्य होय कविके
तँ हमहूँ अपन जनउ तोरि ली
टीक काटि
गड़ीयाबै लागू झा मिसरके
खए लागू पाया आ लेग
कवि बनी की नै
मन बुझए अबे की नै

मुदा अकादमी पुरस्कार
भेटत हमरे
सभ परहत हमरे
कर्मे नहि तँ कुकर्मे
सभ परहत हमरे ।
*****

भाग -२; गीत

गीत - १ (अहाँ कोना रहब)

कहु तँ अहाँ कोना रहब
की की करब यौ पाहून
बिनु जतरे हम नैहर एलहुँ
कोना अहाँ रहब यौ पाहून।।

चूल्हा पजारब कोना अहाँ कहु
कोना राति बिताएब यौ पाहून
बारीक पटूआ तिते बुझलहुँ
छूछे कोना खाएब यौ पाहून।।

लिख-लिख हमहूँ निन्न नहि परलहुँ
अहाँकेँ सुमरै छी यौ पाहून
की अहुँ एखन जागल होएब
नै सपनामे आबि कहै छी यौ पाहून।।

गीत -२ (दूल्हा आजुकेँ)

लगबियौन-लगबियौन हिनकर बोली ई, दूल्हा आजुकेँ
हिनकर बड्ड मोल छन्हि, ई तँ दूल्हा आजुकेँ
हिनकर बाबू बिकेलखिन्ह लाखे, बाबा कए हजारी
लगबियौन मिल जुइल कऽ बोली ई दूल्हा आजुकेँ

हिनकर गुण छन्हि बड़भारी, ई रखै छथि दूटा बखारी
दरबज्जा पर जोड़ा बडद,रंग जकर छन्हि कारी
भरि दिन ई पाउज पान करैत छथि, जेना करे पारी
भोरे उठि ई लोटा लऽ कऽ पीबए जाए छथि तारी

साँझु-पहर चौक पर जेता, चाहीएनि हिनका सबारी
ई छथि माएक बड्ड -दुलरुआ,हिनका दियौंह एकटा गाड़ी
हिनकर गुण छन्हि बड़भारी ई पिबै छथि खाली तारी
हिनका पहिरऽ आबै छन्हि नहि धोती, दियौन जोर भरि सारी

लगबियौन-लगबियौन हिनकर बोली ई,दूल्हा आजुकेँ
हिनकर बर मोल छन्हि, ई तँ दूल्हा आजुकेँ
****

गीत -३ (आलू कोबी मरचाइ)

(आलू कोबी मरचाइ यै,
कि लेबै यै दाइ यै / दाय यै)-२

कोयलखकेँ आलू, राँचीकेँ मरचाइ यै
बाबा करता बड्ड, बड़ाइ यै / बड़ाइ यै
आलू कोबी - - - - - - -दाइ यै

नहि लेब तँ कनी देखियो लियौ
देखएकेँ नहि कोनो पाइ यै / पाइ यै
आलू कोबी - - - - - - - - दाइ यै

दरभंगासँ अन्लौंह विलेतिया ई कोबी
खाए कऽ तँ कनियाँ बिसरती जिलेबी
कोयलखकेँ आलू ई चालू बनेतै
धिया-पुताकेँ बड्ड ई सुहेतै
राँचीसँ अन्लौंह मरचाइ यै
की लेबै यै दाइ यै / दाइ यै

(आलू कोबी मरचाइ यै,
की लेबै यै दाइ यै / दाइ यै)-२
****

गीत - ४ (कनियाँ झिटकी बाली)

यै सुंदर-सुंदर कनियाँ
अहाँकेँ बाजे बड्ड नीक पैजनियाँ
ई झुमकी,लाली,बिंदियाँ
 चम्-चम् चमके अहाँकेँ ओधनियाँ

कनिको तँ सम्भालू अप्पन
ओ मुस्की चौबन्नी बाली
नै तँ लऽ लेत हमर जान
यै कनियाँ -झिटकी बाली

ई कल्पतरु सन पसरल
मनोहारी कंचन केश
बिषधरसँ बेसी मादक
ई सुंदर अहाँक भेष

रहितों जँ हम कवि
रचितहुँ सुन्नर कविता
बस मोने-म़ोन देखैत छी
हम अहाँक छबिता
****

गीत - ५ (नैहरसँ एलै नै कोनो संदेश)

नैहरसँ एलै नै कोनो संदेश
पिया घर बसलहुँ दूर परदेश
भैया बिसरलहुँ बाबू नहि एलहुँ
दुनियाँकेँ रीतमे किएक भगेलहुँ
सखी बहिनिपा सभटा छूटल
नेनपनकेँ जोड़ल सभटा सपना टूटल
रानी कहि कहि मए अहाँ पोसलहुँ
बर्खसँ आइ मुँहो नहि देखलहुँ
छूटल टोल आ बाट सभ छूटल
अपन गामक कौओ नै भेटल
नै आब बेसी हम सहि सकबै
आउ भैया 'मनु' नै तँ हम नै जीबै ।
****

गीत -६ (बेटी)

{(बेटी अछि अहाँक गौरब भैया)-२

सुनू मिथिलाकेँ सभ मैया }-२

बेटी अछि भविष्य हमर समाजक

(नहि वेटीकेँ निरसाउ हे दैया)-२

(किएक बेटा बचैपर अहाँ उतरलहुँ)-२

यौ बेटाकेँ बाबू

बिन बेटीकेँ कोना चलत

ई देश समाज बताबू

नै बनू निर्लज्य अहाँ

काल्हि अहुँ अपन बेटी बियाहब

जागू जागू यौ बेटीक बाबू

भाइ बहिन आ माए सब जागू

किएक मोटरी बुझि नैन्हेंटामे

बेटीक वियाह करेलहुँ

देखू ओकर जिनगीकेँ

घोर नरकमय बनेलहुँ

आब नै एहेन गल्लती करब

बेटीकेँ शिक्षित करब

माथ उठा कए ओहो चलेए

एहन सभसँ विनती करब

{(दहेज रूपी दानबकेँ हम सभ)-२

मिल कए आब जड़ाबी }-२

जे कियो दहेज माँगथि

हुनका बेटा सहीत भगाबी

(चाही त' बेक साउंड आ आन्तरा पर नीचांक देल लाइनक प्रयोग सेहो कए सकैत छी)

जय हो ....

जय हो ....

जय हो मिथिलाकेँ बेटीकेँ

जय हो मिथिलाक नव समाज

जय हो ..... जय हो ......

****

गीत - ७

तोरा देख सुन्नरी सीटी हमर बजैए

करेजासँ एकदम नम्हर आह निकलैए

चारि सए चालीस भोल्ट करेन्ट तोहर गोरीया

देखते माँतर हमर मोन चमकैए

मुस्कीक लाबा छीटैत किएक एना गोरीया

कतेको करेजाक धरकन बन्द करैए

बेकारे बनेलक ई एटम बम दुनियाँ

कनखी नजरि तोहर लाखोकेँ जान मारैए

एक बेर जे पेएर झारि बजा दे पैजनियाँ

हाथमे करेज लए ‘मनु’ चलि अबैए

****

गीत -८

बड़ अजगुत भेल)2 गौरा तोर अँगनमा
सुनू-सुनू गमकए)2 आइ पूरी पकनमा

बड़ अजगुत भेल) 2 गौरा तोर अँगनमा
सुनू-सुनू गमकए) 2 आइ पूरी पकनमा

गौरा के एलह आइ तोर अँगनमा) 2
देखू-देखू गमकए आइ पूरी पकनमा) 2
कोन दिस गौरा आइ) 2 उगलाह सूरज
कि बिसरल हम तोर अँगनमा
बड़ अजगुत भेल) 2 गौरा तोर अँगनमा
सुनू-सुनू गमकए) 2 आइ पूरी पकनमा

सुनू सखी सुनू-सुनू)2
नहि अहाँ बिसरल, आइ हमर अँगनमा
ओ नहि गमकए) 2 आइ पूरी पकनमा

लएलाह भोला आइ)2 भाँगक पुआ
देलकन्हि हुनकर मनु भक्त दूलरुआ
ओकरे जे रखिते) 2 एलहुँ हे अहाँ
आकरे ई गमक छी हे सखी सुनूने

बड़ अजगुत भेल) 2 गौरा तोर अँगनमा
सुनू-सुनू गमकए) 2 आइ पूरी पकनमा

****

गीत - ९

भोलेबाबा हौ
खोलबअ केखन अपन द्वार) -२

हम दुखिया जन्मे कए दुखल
एलहुँ तोहरे द्वार
भोलेबाबा हो - - - - - अपन द्वार

तन दुखिया अछि मन अछि दुखिया
दुखिए जन्म हमार
सुनि महिमां भोले एलहुँ तोरे द्वारे
करबअ केखन हमर उद्धार
भोलेबाबा हो - - - - - अपन द्वार

मुनलह तु अपन नयना
मुनलह हमर कपार
एलहुँ भटकैत,भटकैत तोरे द्वारे
मुनलह किएक अपन केबार

भोलेबाबा हो - - - - - अपन द्वार) -२
****

गीत - १०

ई जे साँझ परलै मैया

की हमरे जीवनमे

मुनल आँखि तकबै कहिया

हमरो जीवनमे।।

सगरो दुनियाँकेँ चिलका

माएक आँचर तर

हम अभागल कोना

भटकै छी दर-दर।।

घुरि, बुझि आबो आबू

'मनु' अबुद्धि नेना

अपन सिनेहसँ किएक

बिसरलहुँ ऐना।।

****

गीत - ११ (मैयाक गीत)

मैया भवानी अलख जगेथीन
अन्न धन देथीन हमरो घर ना
नै हम रहबै लेने खाली दूबि धान

माँगै छी मैयासँ माँगक सेनूर
लाले लाल अचरीक दान
मैया करथीन हमरो कल्याण

सोन सन ललना हमरो कोरामे
देथीन मैया एक दिन ना
एबै हम संगे संग
करै लेल एहिठाम चूमान

जोगनी बनि सेबलहुँ हम
मैयाकेँ एखन धरि
वन वनसँ अनलहुँ फूल पान
मैया कनी दियौ हमरोपर धियान

****

गीत - १२ (मैयाक गीत)

मैया मैया मैया बाजू, करेजा अपन खोलि कए
छन्नेमे मैया सबटा देखती, आँखि अपन खोलि कए

तनसँ तँ बहुत जपलहुँ, नाम मैयाकेँ दिन राति
आबू कनी जपै छी मनसँ, आइ छी जागरणकेँ राति

नअ पूजा नबो मैयाक, ई तँ नअ महिनाक कर्ज अछि
एकरा उतारि सकब जीवन भरि, ई तँ मनक भर्म अछि

पहिल मैया जगजननी, दोसर हमरा जे जन्म देलनि
सुख सबटा हमरा दए, दुख अपन आँचरमे लेलनि

अपन जननीकेँ जँ दए पेलहुँ, रत्तीयो भरि जीवनमे सुख
जगजननी मैया लए लेथिन, जीवनक हमर सबटा दुख

चाहै छी जँ भक्ति आ दया, मनसँ मैया रानीक हमसभ
ली संकल्प नै नोर खसाएब, ‘मनु’ अपन जननीक हमसभ

****

लेखक परिचय

नाम - जगदानन्द झा 'मनु'

पिता - स्वर्गीय राज कुमार झा

माता - मंजू देवी

जन्म तिथि आ स्थान - 13 नवम्बर; 1973, हरिपुर डीहटोल, मधुबनी ।

शिक्षा - बिजनेसमे स्नातक, दिल्ली विश्वविद्यालयसँ । इलेक्ट्रानिक्स आ कम्पयूटर हार्डवेयरमे डिप्लोमा।

वृति - प्रोफेसनल नेटवर्कर आ बिजनेस लीडर

पैतृक गाम पता - ग्राम पोस्ट हरिपुर डीहटोल, जिला मधुबनी, बिहार, पिन 847229

वर्तमान पता- अशोका ग्रीनस, सेक्टर 1 ग्रेटर नोएडा वेस्ट, जिला गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश

मोबाइल/ वाट्सअप न० - 91 92124 61006

ई मेल - jagdanandjha@gmail.com

साहित्यिक उपलब्धि -

(क) 2011 सँ विदेह ई पत्रिका संगे संग विभिन्न, ब्लॉग आ प्रिंट पत्रिका सभमे गजल, गीत, कविता, बीहनि कथा आ कथा प्रकाशित भ रहल अछि ।

(ख) कृति पोथि -

- नढ़िया भुकैए हमर घराड़ीपर - बहरयुक्त गजल संग्रह
- तोहर कतेक रंग - बीहनि कथा संग्रह
- व्यथा - कविता आ गीत संग्रह
- चोनहा - बाल उपन्यास, विदेह मैथिली शिशु उत्सव मे प्रकाशित